Final report of the Minor Research Project

NIRMAL VARMA KE KATHA SAHITYA MEIN SAMAAJIK SAROKAAR

Submitted to

University Grants Commission

MRP/12th plan/14-15/KLM G020/UGC-SWRO

Dr. SREEJA G.R

Assistant Professor in Hindi

Nirmala College, Muvattupuzha

Kerala - 686661

8H3.09 SRE-N

PR0022

भूमिका

स्वातंत्र्योत्रर हिन्दी साहित्याकारों में निर्मल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। साहित्य के क्षेत्र में उनका आगमन मूल रूप से एक कहानिकार के रूप में हुआ है। साहित्य और समाज के रिश्ते को निर्मल वर्मा नए ढंग से पहचानते है। समाज के बारे में सोचते समय निर्मलजी कभी भी उसे वर्गों, जातियों और समुदायों में बांट कर नहीं सोचते, बल्कि वे इनके महत्व को स्वीकार करते हुए मानव को एक मानते हुए उसकी समस्याओं को रेखांकित करने की कोशिश की। अपनी रचनाओं एवं अपने कथा साहित्य के पात्रों के ज़रिए उन्होंने साहित्य और समाज के आपसी सम्बन्धों और सरोकार को स्पष्ट करने का प्रसाय किया है। "निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में सामजाकि सरोकार'' नामक प्रस्तुत परियोजना में निर्मल वर्मा ने साहित्य और समाज के जिस सरोकार का जिक्र किया है, उसका अध्ययन विश्लेषण करने की कोशिश की गयी है।

"निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार'' शीर्षक परियोजना तीन अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है - हिन्दी साहित्य में निर्मल वर्मा का स्थान। द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - निर्मल वर्मा का कथा साहित्य : एक सामान्य परिचय तृतीय अध्याय का श़ीर्षक है निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में सामाजिक सरोकार और अन्त में उपसंहार है।

निर्मला कॉलेज

मूवाट्टुपुषा

श्रीजा जी. आर.

विषय सूची

अध्याय - एक

हिन्दी साहित्य में निर्मल वर्मा का स्थान

अध्याय - दो

निर्मल वर्मा का कथा साहित्य : एक सामान्य परिचय

अध्याय - तीन

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची